B.A. Part II 28/1/22
Hindi(Hons) क्रमशः:

डॉ० अरुण कुमार
हिंदी
स्ना० स्न० कॉ०, जहानाबाद

साधारण की श्रेष्ठता का स्वर मुखरकर किया है। बरसात में कूड़े कूकर के ढेर पर अनायास उग आने वाले कुकुरमुत्ता नवाब साहब के उद्यान में संचित पोषित और माली द्वारा पोषित गुलाब को चुनौती दे रहा है –

"अबे सुन बे गुलाब, भूल मत गर पाई खुशबू रंगो आब।
खून चूसा खाद का तूने अशिष्ट, डाल पर इतरा रहा कैपिटलिस्ट॥"

कुकुरमुत्ता एक दुधारी तलवार है। इसमें केवल पूंजीपति की हिमायत ही नहीं, उसके मिथ्या, दर्प और अतिरंजित गौरव की उड़ान उड़ाते स्वयं अपहास्यपद बन जाता है। इस तरह 'प्रेम संगीत', 'स्फटिक', 'गर्म पकौड़ी', 'मूंग महंगा रहा', 'रानी और कानी' आदि कविताओं में भी निराला जी एक समर्थ व्यंग्यकार के रूप में सामने आते हैं। उन्होंने अपने चारों ओर के जीवन को आँखें खोलकर देखा और उसपर निर्ममता से चाबुक चलाया है। आचार्य नलिन विलोचन शर्मा के अनुसार – "छायावाद में सेक्स का जो हौआ बनाया था उसको इन कचौड़ी-पकौड़ी वाली कविताओं ने ही तोड़ा।"

'बेला', 'अणिमा' और 'नये पत्ते' के समाजोन्मुखी यथार्थवाद निराला के काव्य की साधना ने एक और मंजिल तय की। 'अर्चना', 'आराधना', 'गीत गुंज' का स्वर आध्यात्मिक है। इनमें एक भरी हुई गागर की गंभीरता, एक प्रशांत लय है, मानो जीवन की सारी हलचलों को पार कर यात्री अपने गन्तव्य के निकट पहुँच गया हो। कहीं इनमें एक अनुभव सिद्ध वृद्ध दार्शनिक मुद्रा है तो कहीं भक्त का अपने आराध्य के सम्मुख निष्कपट, दैन्य और समर्पण भाव है। भाषा इतनी सरल और पारदर्शी है कि सूर और मीरा के भावों भरी गीतों का सहज ही स्मरण हो जाता है। शब्दों के अर्थ को अंतिम बूंद तक को निचोड़ गया है। जैसे –

"बाँधो न नाव इस ठांव बंधु पूछेगा सारा गाँव बंधु।"